

डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 21, मंदिर का विनाश

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 21 है, मंदिर का पतन।

हमने दो राजाओं की कहानी के साथ समाप्त किया, जिनका शासन ईश्वर के प्रति उनकी बेवफाई और अपने राज्य को इस तरह चलाने के उनके दृढ़ संकल्प के कारण बहुत समझौतापूर्ण था, जैसे कि वे ईश्वर के सिंहासन पर होने के बजाय अपने स्वयं के सिंहासन पर हों, जैसा कि इतिहासकार इसे देखते हैं।

अब उज्जियाह का शासनकाल आता है। इसे ऐतिहासिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो हम 8वीं सदी की शुरुआत में हैं। 8वीं सदी के पहले आधे हिस्से में उज्जियाह का शासन बहुत लंबा था।

यह समय राजनीतिक और आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध है। इसलिए, अगर हम राजाओं की पुस्तक में वापस जाएं, तो हम पाते हैं कि यारोबाम द्वितीय उत्तर में राजा है और उत्तर, इज़राइल, इस समय राजनीतिक प्रभाव और शक्ति प्राप्त करता है जैसा कि वास्तव में सुलैमान के समय से कभी नहीं हुआ था। यारोबाम द्वितीय के तहत राजाओं में वर्णित इज़राइल की सीमाएँ अराम-सोबा के क्षेत्र तक और लाल सागर तक फैली हुई हैं जैसा कि वे पहले थीं।

तो, ये उत्तर में, विशेष रूप से इज़राइल में, बहुत ही पतनशील समय था, और यहाँ हमें पैगंबर आमोस के फैसले मिलते हैं, विशेष रूप से नेताओं के भ्रष्टाचार और जिस तरह से वे गरीबों के सिर को धूल में मिला रहे थे और इसी तरह की अन्य बातों की ओर इशारा करते हैं।

अब, उज्जियाह, जो उसी समय शासन कर रहा था, वास्तव में इन राजनीतिक भाग्य का लाभार्थी था, जो काफी हद तक इसलिए आया क्योंकि असीरियन अभी भी पतन के दौर में थे। अरामियों को यारोबाम की शक्ति के तहत पीछे धकेल दिया गया था, जिसने यहू और उसके भयानक सफाए के समय के बाद सेना का पुनर्निर्माण किया था।

और इसलिए, उज्जियाह कुछ हद तक इसका लाभार्थी था। हालाँकि, उज्जियाह के शासनकाल का अंत वास्तव में मंदिर के पतन से चिह्नित है। इसलिए जहाँ तक मंदिर का सवाल है, यह समय अवधि बहुत समृद्ध तरीके से शुरू होती है, लेकिन इसका अंत बहुत विनाशकारी तरीके से होता है।

फिर हम उज्जियाह नामक राजा से शुरू करते हैं, जिसे अन्यत्र अजर्याह के नाम से भी जाना जाता है। उज्जियाह का शासनकाल दो बहुत ही अलग-अलग अवधियों में विभाजित है। एक अवधि

महान सैन्य और आर्थिक उपलब्धियों, फिलिस्तीन क्षेत्र में विस्तार, किलेबंदी का विकास और कृषि विकास की अवधि है।

उज्जियाह इन सभी चीजों का बहुत समर्थक था। और यह, निश्चित रूप से, उसके सबसे महत्वपूर्ण पड़ोसी, यारोबाम द्वितीय, जो उत्तर में था, के साथ भी जो हो रहा था, उसके अनुसार देखा जा सकता है। इसलिए, उज्जियाह के पास वास्तव में इन सभी उपलब्धियों को प्राप्त करने की बहुत स्वतंत्रता थी।

हालाँकि, उज्जियाह का शासन बहुत अच्छा नहीं रहा। और क्रॉनिकल हमें उज्जियाह के साथ हुई एक घटना के बारे में बताता है, जिसके बारे में हम केवल उससे ही जानते हैं, जिसमें उसने पुजारी के अधिकार को हड़पने का प्रयास किया। अब, मंदिर में और यहूदा के लिए, यह कोई छोटी बात नहीं है।

टोरा में वापस जाने पर, राजा और पुजारी के बीच एक अलगाव है। यह कुछ ऐसा है जिसे इब्रानियों की पुस्तक में विस्तार से समझाया गया है। यीशु राजा और पुजारी दोनों कैसे बन गए, जबकि टोरा के अनुसार, राजा और पुजारी की दो भूमिकाएँ हमेशा अलग-अलग होती हैं? खैर, इब्रानियों के लेखक ने उत्पत्ति की अपनी व्याख्या यह समझाने के लिए की है कि कैसे, यीशु के व्यक्तित्व में, इन दोनों पदों को एक साथ लाया गया है ताकि यीशु राजा और पुजारी दोनों बन जाएँ।

यहूदा के समय और मंदिर के समय में जो बात सबसे अलग है, वह यह है कि यह अन्य सभी राष्ट्रों से अलग है। आस-पास के सभी राष्ट्रों में, राजा ही पुजारी होता है और राजा ही मंदिर की सभी गतिविधियों को नियंत्रित करता है। लेकिन इस्राएल में ऐसा नहीं था।

जैसा कि व्यवस्थाविवरण में स्पष्ट रूप से बताया गया है, इस्राएल में राजा को इस टोरा की एक प्रति रखनी थी। उसे अपने पास इस निर्देश की एक प्रति रखनी थी। उसे इस निर्देश का पालन करना था और उसे अपने लोगों को इस निर्देश का पालन करने में नेतृत्व करना था।

राजा अपने आप में राजा नहीं था। वह राजाओं के राजा के प्रकाशन के अधीन एक राजा था। वह परमेश्वर के अधिकार के अधीन एक राजा था और इसलिए, वह वाचा के अधीन था और परमेश्वर की दिव्य अपेक्षाओं के अधीन था, अन्य सभी लोगों की तरह।

यही उसकी भूमिका थी और यही उसका कार्य था। परमेश्वर के साथ इस वाचा को पूरा करने में पुजारी का कार्य पूरी तरह से अलग था। और इसलिए, व्यवस्थाविवरण में पुजारियों को उनकी अपनी भूमिका बहुत स्पष्ट रूप से दी गई है।

और, बेशक, गिनती और लैव्यव्यवस्था में, हम इसे स्पष्ट रूप से देखते हैं कि पुजारी हारून के वंशज हैं, जबकि राजा कभी हारून का वंशज नहीं होता। इसलिए, इस्राएल राष्ट्र में यह अलगाव हमेशा यह स्पष्ट करने का एक तरीका था कि वे यहोवा के अधीन थे, जिसने उन्हें वाचा दी थी और जिसने अपनी वाचा को राजा द्वारा एक क्षमता में पूरा करने के लिए नामित किया था, लेकिन राजा के रूप में यहोवा का प्रतिनिधित्व, मंदिर और उसके सभी अनुष्ठानों और बाकी सब के माध्यम से

प्रतिनिधित्व, पुजारी द्वारा किया जाना था। पुजारी की भूमिकाओं का किसी और द्वारा उल्लंघन नहीं किया जाना था क्योंकि वे ही थे जो उस अर्थ में पवित्र थे।

अर्थात्, उन्हें मंदिर में पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए सक्षम करने हेतु परमेश्वर से एक विशेष पद प्राप्त हुआ। और वर्ष में एक बार कफोदत पर रक्त छिड़कना, जो कि परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाले सबसे पवित्र स्थान में सन्दूक है। यह उनका पद है, और इसीलिए उन्हें पवित्र कहा जाता है, जबकि राजा और लोग पवित्र नहीं हैं।

अब, इसे देखने का एक और तरीका है क्योंकि हम निर्गमन की पुस्तक में वाचा पर आते हैं। निर्गमन 20 में सभी लोग परमेश्वर से अलग हैं और पवित्र हैं, और इस्राएल के सभी राष्ट्र परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए, यह सम्मान है जिसमें प्रत्येक इस्राएली पवित्र है।

लेकिन पूजा-पाठ के कार्य में और भी अंतर हैं, और यह केवल लेवियों के लिए है, और यह केवल लेवियों के हिस्से के रूप में पुजारी हैं, जिनके पास मंदिर में अनुष्ठान करने के लिए योग्यता होने का यह अंतर है, जो भगवान की उपस्थिति में पवित्रता का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए, यह इतनी बड़ी बात नहीं लग सकती है कि राजा उज्जियाह ने सबसे पवित्र स्थान के ठीक सामने खड़ी वेदी पर धूप चढ़ाने का प्रयास किया। लेकिन यह वाचा का पूर्ण उल्लंघन था और उन संरचनाओं का पूर्ण उल्लंघन था जो वाचा का प्रतिनिधित्व करती थीं और विशेष रूप से, वे संरचनाएं जो मंदिर और उसके कार्य का प्रतिनिधित्व करने वाली थीं।

और इसलिए, यह एक बहुत ही गंभीर पाप था जो उज्जियाह ने किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि वह कोढ़ी हो गया। अब, हममें से जो लोग कोविड के दिनों में रह रहे हैं, वे अलगाव के इस पूरे मामले को थोड़ा-बहुत समझ सकते हैं।

हममें से ज्यादातर लोगों को इससे ज्यादा डर नहीं लगता कि उन्हें 14 दिनों के लिए अलग-थलग रहना होगा और हम 14 दिनों तक किसी और से सामाजिक रूप से बातचीत नहीं कर सकते। कम से कम अभी कनाडा में हमारी दुनिया ऐसी ही है। और इसलिए, हम हमेशा अलग-थलग रहने के इस खतरे के साथ काम करते हैं जिसका मतलब यह नहीं है कि हम जेल में हैं।

हम एक निश्चित अर्थ में स्वतंत्र हैं, लेकिन हम एक बहुत ही सीमित अर्थ में स्वतंत्र हैं, जिसमें हम कुछ खास तरह के संपर्क नहीं रख सकते हैं, और हमारे पास कहीं भी जाने और इस तरह की चीजों पर सीमाएँ हैं। खैर, प्राचीन काल में कोढ़ी के लिए यही सच था, सिवाय इसके कि अगर कोढ़ी को कुछ रोग से ठीक नहीं किया गया था, जो किसी तरह का त्वचा रोग था। यह हैनसेन की बीमारी नहीं थी, लेकिन कोढ़ी उसी श्रेणी में आते थे जिसे हम आज कोविड के समय में अलगाव कहते हैं।

इसलिए, उज्जियाह अब राजा के रूप में अपने शाही कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकता था क्योंकि एक पुजारी के अधिकारों का उल्लंघन करने की सज़ा के कारण वह कोढ़ी बन गया था। उज्जियाह के अंत की यही दुखद कहानी है। उज्जियाह के बाद उसका बेटा योताम राजा बना।

अब, अगर हम योताम के शासनकाल को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें, तो योताम के दिन 8वीं सदी के उत्तरार्ध के हैं। उज्जियाह की मृत्यु लगभग 840 वर्ष में होती है। उज्जियाह इस बारे में काफ़ी बातें करता है।

जिस वर्ष राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई, मैंने प्रभु को ऊँचा और ऊपर उठा हुआ देखा। अब, यह उज्जियाह के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन था क्योंकि वास्तव में, जब उज्जियाह की मृत्यु हुई, तो उत्तर में पतन पहले से ही शुरू हो रहा था, जहाँ यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के बाद, बार-बार हत्याएँ हो रही थीं और पेकाह और रसिन तथा पेकाह और अन्य के अंतिम राजाओं के बीच प्रतिस्पर्धात्मक शासन था। राजनीतिक समय बहुत अनिश्चित था और, आंशिक रूप से, राजनीतिक समय बहुत अनिश्चित था क्योंकि असीरियन सम्राट तिग्लथ-पिलेसर अब न केवल अरामियों या सीरिया को उत्तर की ओर विस्थापित कर रहा था, बल्कि वह इज़राइल के और भी करीब आ रहा था, और यह इज़राइल और उसके राजाओं पर बहुत दबाव बना रहा था।

इसलिए, जब वर्ष 740 में उज्जियाह की मृत्यु हुई, तो यशायाह को याद दिलाना पड़ा कि राजा कौन था, प्रभु जो ऊँचा और महान था। खैर, इस समय के कुछ समय बाद ही योताम शासन करने के लिए आता है। अगर हम इसे कालानुक्रमिक रूप से देखें, तो योताम का अपने पिता, उज्जियाह के साथ काफी लंबे समय तक शासन रहा होगा।

अब, यह पूरी तरह से समझ में आता है क्योंकि अगर उज्जियाह एक कोढ़ी था और अनिवार्य रूप से वह अलगाव में था, तो किसी और को उसके स्थान पर शासन करना था। इसलिए, वह अभी भी राजा था, लेकिन कोई और उसके स्थान पर शासन कर रहा था, और वह उसका बेटा योताम था। अब, योताम, जैसा कि क्रॉनिकलर में यहाँ बताया गया है, वास्तव में काफी सकारात्मक मूल्यांकन दिया गया है।

वह अपने पिता उज्जियाह की तरह ही है। देखिए, अपने शासनकाल की शुरुआत में, उज्जियाह ही वह व्यक्ति था जिसने यहूदा को समृद्ध बनाया था और जिसने मंदिर को पूजा का स्थान और प्राथमिकता बनाया था। लेकिन, वे बहुत अशांत समय थे, और राजनीतिक रूप से, योताम अभी भी ट्रांसजॉर्डन में एक निश्चित मात्रा में नियंत्रण रखने में सक्षम था, जिसके बारे में इतिहासकार बात करते हैं।

इसलिए, इतिहासकार के अनुसार, उज्जियाह के उत्तराधिकारी के रूप में योताम का सकारात्मक मूल्यांकन है, जो उसके उत्तराधिकारी आहाज के विपरीत है। आहाज वह राजा है जो इस्राएल के अंत के प्रभावी होने पर यहूदा पर शासन करेगा। तिग्लथ-पिलेसर के बाद शालमनेसर वी था, और फिर सरगोन द्वितीय था, और अनिवार्य रूप से, जैसा कि यशायाह अध्याय 8 और 9, या 7 से 9 में वर्णित है, इस्राएल को असीरियन प्रांतों, समुद्र के क्षेत्र, गलील और राष्ट्रों के क्षेत्र में बदल दिया गया था।

इसलिए, इस्राएल अब स्वतंत्र नहीं था। बेशक, 722 में, सामरिया की हार हुई, सभी शासन का अंत हुआ, होशे के शासन का अंत हुआ, और निर्वासन हुआ। यह सब 2 राजा 16 और 2 राजा 17 में होता है।

इतिहासकार उत्तर में इसराइल में क्या हो रहा है, इसका उल्लेख नहीं करता है, हालांकि उसका विवरण यह स्पष्ट करता है कि आहाज, जो योताम का उत्तराधिकारी है, इन सभी घटनाओं से अत्यधिक प्रभावित है। इसलिए, इसराइल के पतन और अशूरियों के वर्चस्व के परिणामस्वरूप बाल पंथ पुनर्जीवित हो गया है। और आहाज को उन राजाओं में से एक के रूप में चिह्नित किया गया है जिन्होंने अपने बच्चों को आग में से गुजरने के लिए मजबूर किया।

इसे कभी-कभी राजा के लाभ के लिए एक बच्चे की बलि के रूप में दर्शाया गया है। और ऐसा नहीं है कि ऐसा नहीं हुआ होगा, जैसा कि हम मोआब के राजा के बारे में पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए, लेकिन आग के माध्यम से एक बच्चे को पारित करने के इन सभी संदर्भों की बारीकी से जांच एक शिशु के लिए दफन समारोह की तरह है जो हिब्रू में टोफेट के रूप में संदर्भित एक अनुष्ठान में मर गया है। तो, यह अन्य देवताओं के लिए एक समर्पण है जिसमें इस बच्चे के शरीर को टोफेट में जलाया जाता है।

यह वास्तव में बाल बलि नहीं है, लेकिन यह एक समर्पण समारोह है जिसमें समर्पण अन्य देवताओं को किया जाता है जिन्हें मदद करनी चाहिए। इसलिए, आहाज वास्तव में बहुत गंभीर तरीके से समन्वयवाद में शामिल रहा है। लेकिन सबसे प्रमुख रूप से, जैसा कि हम यशायाह की पुस्तक से जानते हैं, आहाज उत्तर में अपने दो पड़ोसियों के साथ संघर्ष में था।

सबसे पहले, पेकह इजराइल में है, और फिर रसीन सीरिया में है। और, बेशक, जैसा कि हम यशायाह की किताब में देखते हैं, पेकह और रसीन दोनों ही असीरियन सेनाओं के बढ़ते अतिक्रमण का विरोध करने की कोशिश कर रहे थे। और इसलिए, वे इन असीरियन सेनाओं का विरोध करने के लिए एक गठबंधन बनाने की कोशिश कर रहे थे, और आहाज इस गठबंधन में शामिल नहीं होना चाहता था।

बेशक, आहाज ने रेजिन और पेकाह के गठबंधन में शामिल होने के बजाय अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए अशूरियों की सहायता मांगी। यह बहुत ही चतुर चाल की तरह नहीं लग सकता है, और यह वास्तव में बहुत ही चतुर चाल नहीं थी क्योंकि अशूरियों का सीरिया और इजराइल पर कब्जा करना बंद करने का कोई इरादा नहीं था। यह स्पष्ट रूप से यहूदा था जो उनकी सूची में अगला था, जैसा कि हम हिजकिय्याह की कहानी में पता लगाएंगे, जो आहाज का उत्तराधिकारी है।

लेकिन किसी भी मामले में, यह आहाज की बहुत दुखद और भयानक रणनीति थी, जिसके लिए उसे इतिहास में ओदेद नबी से कड़ी फटकार मिलती है। ओदेद की यह भविष्यवाणी इस तथ्य की मान्यता है कि इस्राएल अब असीरियन शक्ति के अधीन हो रहा है और उन्हें भाइयों के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। सिर्फ इसलिए कि वे असीरियन के अधीन हो गए हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे किसी न किसी तरह से इस्राएल का हिस्सा नहीं रह गए हैं।

तो, यह ओडेड का संदेश है। और बेशक, हम पहले ही बता चुके हैं कि अशूरियों के साथ गठबंधन करने का आहाज का प्रयास पूरी तरह विफल रहा और एक आपदा थी। तो, अब हम उस समय पर हैं जहाँ मंदिर के लिए एक बिल्कुल नया युग है, और एक बिल्कुल नई शुरुआत है।

हम देखेंगे कि इतिहास की पुस्तक में, हिजकिय्याह अब दूसरा सुलैमान बन गया है, क्योंकि उसके पास वास्तव में पूरे इस्राएल का प्रतिनिधित्व करने का एक नया अवसर है। हो सकता है कि इस्राएली बंदी बना लिए गए हों, अशूरियों ने उन पर कब्ज़ा कर लिया हो, और उनमें से कुछ को निर्वासित कर दिया गया हो। लेकिन यह उन्हें पूरे इस्राएल का हिस्सा बनने से नहीं रोकता।

हिजकिय्याह के मिशन का वर्णन करते समय इतिहासकार का पूरा ध्यान इसी पर केंद्रित हो जाता है। आहाज के शासन में मंदिर एक निम्न बिंदु पर पहुंच गया था, लेकिन एक राष्ट्र और एक शक्ति के रूप में उत्तर के लुप्त होने के साथ, मंदिर के चारों ओर पूजा करने और रैली करने के मामले में एक और अवसर था।

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर उनके शिक्षण में दिया गया है। यह सत्र 21 है, मंदिर का पतन।